भारत सरकार

रेल मंत्रालय

राज्य सभा

02.02.2024 के

अतारांकित प्रश्न सं. 132 का उत्तर

भारतीय रेल का परिचालन अनुपात

132. श्री मल्लिकार्जुन खरगेः

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि भारतीय रेल का परिचालन अनुपात बदतर होता जा रहा है;

(ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके क्या कारण हैं;

(ग) राष्ट्रीय रेल संरक्षा कोष (आरआरएसके) के आरंभ से अब तक इसके अंतर्गत स्वीकृत, जारी और उपयोग की गई निधि का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है; और

(घ) विगत पांच वर्षो के दौरान मूल्यह्रास आरक्षित निधि के अंतर्गत स्वीकृत, जारी और उपयोग की गई निधियों का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है?

उत्तर

रेल, संचार एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

(श्री अश्विनी वैष्णव)

(क) से (घ): विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

****

भारतीय रेल का परिचालन अनुपात के संबंध में दिनांक 02.02.2024 को राज्य सभा में श्री मल्लिकार्जुन खरगे के अतारांकित प्रश्न सं. 132 के भाग (क) से (घ) के उत्तर से संबंधित **विवरण।**

(क) से (घ): 2018-19 में परिचालन अनुपात 97.3% था, जो कोविड महामारी के दौरान प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ था। 2022-23 में, महामारी के बाद, परिचालन अनुपात में सुधार हुआ और यह 98.10% हो गया।

वर्ष 2017-18 में राष्ट्रीय रेल संरक्षा कोष (आरआरएसके) का 1 लाख करोड़ रु के अंशदान से संरक्षा संबंधी निहितार्थ के साथ नवीकरण/प्रतिस्थापन संबंधी कार्यों के निष्पादन हेतु निधियों को इसी प्रयोजन हेतु सुरक्षित करने के लिए 5 वर्षों की अवधि के लिए सृजन किया गया था। 2017-18 से आरआरएसके के तहत स्वीकृत कार्यों पर उपगत सकल व्यय नीचे दिया गया है:

(करोड़ रुपये में)

वर्ष	राशि
2017-18	17260 करोड़ रु.
2018-19	19596 करोड़ रु.
2019-20	16800 करोड़ रु.
2020-21	27713 करोड़ रु.
2021-22	27374 करोड़ रु.
2017-18 से 2021-22	108743 करोड़ रु.

सरकार ने आरआरएसके की वैधता अवधि को सकल बजटीय सहायता से 45,000, करोड़ रुपये के कुल प्रावधान के साथ 2022-23 से आगे 5 वर्ष के लिए बढ़ा दिया है।

रेल बजट के विलय के साथ सकल बजटीय सहायता (जीबीएस) वर्ष 2013-14 में 29,055 करोड़ रु. से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 2,40,200 करोड़ रु. हो गई है। रेलवे में निवेश मुख्यतः सकल बजटीय सहायता (जीबीएस) के माध्यम से किया जाता है। आंतरिक निधियों के माध्यम से किया गया निवेश, जैसे मूल्यह्रास आरक्षित निधि आदि, काफी कम होता है और आवश्यकता के आधार पर किया जाता है।

****